PRIVATE CIRCULATION ONLY

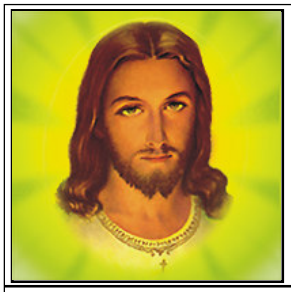

दिव्य ज्योति

सितम्बर 2006 ISSUE 0906 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

हमारे जीवन्त महापुरोहित मसीह की प्रार्थना

प्रभु येशु, हमारे स्वामी एवं मुक्तिदाता, ईश्वर की शपथ के अनुसार हम सबकी पाप मुक्ति के लिए पुरोहित (प्रधानयाजक) नियुक्त गये हैं जो पवित्र, निर्दोष, निष्कलंक, पापियों से सर्वथा भिन्न और स्वर्ग से भी ऊँचे हैं। वह अपरिवर्तनीय शपथ यह है– **तुम मेलखिसेदेक की तरह सदा पुरोहित बने रहोगे।** येशु सदा बने रहते हैं, इसलिए उनका पौरोहित्य चिरस्थायी है। वह बहुतों के पाप हरने के लिए एक ही बार क्रूस पर मरे: उन्होंने स्वयं अपना ही रक्त लेकर सदा के लिए एक ही बार परमपावन स्थान में प्रवेश किया और हमारे लिए सदा–सर्वदा बना रहने वाला उद्धार प्राप्त किया है। वह एक समय में पुरोहित भी और बलि भी बने, जो अपनी शरण आये सभी को परिपूर्ण मुक्ति दिलाने में समर्थ हैं क्योंकि वह उनकी ओर से पिता से निवेदन करने के लिए सदा जीवित रहते हैं।**(पढ़ें इब्रानियों7:21, 24-26; 9:12, 28; 10:10)**

इस तरह वह हमारे तथा ईश्वर के केवल एक मध्यस्थ बने जो अनादि और अनन्त हैं। **(1 तिमथी2:5-6)** प्रभु येशु ने इस पृथ्वी पर अपने जीवनकाल में अपने पकड़वाये जाने व दु:खभोग से पहले अपने पिता से अपने शिष्यों व हम विश्वासियों के इस संसार की बुराई से बचाव के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रार्थना की थी। आइये, हम उस महापुरोहित की प्रेम व उत्कण्ठा से भरी विनम्र प्रार्थना को पढ़ें और उसकी गहराई तक पहुँचने की कोशिश करें :

येशु अपनी आँखें ऊपर उठा कर बोले, " पिता! वह घडी आ गयी है। अपने पुत्र को महिमान्वित कर, जिससे पुत्र तेरी महिमा को प्रकट करे। तूने उसे समस्त मानवजाति पर अधिकार दिया है, जिससे वह उन सबों को अनन्त जीवन प्रदान करे, जिन्हें तूने उसे सौंपा है। वे तुझे, एक ही सच्चे ईश्वर को और येशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जान लें– यही अनन्त जीवन है।

जो कार्य तूने मुझे करने को दिया था, वह मैंने पूरा किया है। इस तरह मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा प्रकट की है। पिता! संसार की सृष्टि से पहले मुझे तेरे यहाँ जो महिमा प्राप्त थी, अब उस से मुझे विभूषित कर। तूने जिन लोगों को संसार में से चुन कर मुझे सौंपा, उन पर मैंने तेरा नाम प्रकट किया है। वे तेरे ही थे। उन्होंने तेरी शिक्षा का पालन किया है। अब वे जान गये हैं कि तूने मुझे जो कुछ दिया है, वह सब तुझ से आता है। तूने जो सन्देश मुझे दिया, मैंने वह सन्देश उन्हें दे दिया। वे उसे ग्रहण कर यह जान गये कि मैं तेरे यहाँ से आया हूँ और उन्होंने यह विश्वास किया कि तूने मुझे भेजा।

मैं उनके लिए विनती करता हूँ। मैं संसार के लिए नहीं, बल्कि उनके लिए विनती करता हूँ, जिन्हें तूने मुझे सौंपा है; क्योंकि वे तेरे ही हैं। जो कुछ मेरा है, वह तेरा है और जो तेरा, वह मेरा है। मैं उनके द्वारा महिमान्वित हुआ।

अब मैं संसार में नहीं रहूँगा; परन्तु वे संसार में रहेंगे और मैं तेरे पास आ रहा हूँ। परमपावन पिता! तूने जिन्हें मुझे सौंपा है, उन्हें अपने नाम के सामर्थ्य से सुरक्षित रख, जिससे वे हमारी ही तरह एक बने रहें। तूने जिन्हें मुझे सौंपा है, जब तक मैं उनके साथ रहा, मैंने उन्हें तेरे नाम के सामर्थ्य से सुरक्षित रखा। मैंने उनकी रक्षा की। उन में किसी का भी सर्वनाश नहीं हुआ है। विनाश का पुत्र इसका एकमात्र अपवाद है, क्योंकि धर्मग्रन्थ का पूरा हो जाना अनिवार्य था।

अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ। जब तक मैं

(शेष भाग पृष्ठ 2 पर)

मरियम सेना (लीजन) की श्रंखला- एक लघु प्रार्थना

अन्तरा – वह कौन है जो उषा के समान सुहावनी, चन्द्रमा के समान सुन्दर, सूरज के समान उज्जवल तथा युद्ध के लिए प्रस्थान करती हुई, सेना के समान भयंकर गति से आती है।

प्र) मेरी आत्मा✝प्रभु का गुणगान करती है। (क्रूस का चिन्ह बनायें)

उ) मेरा मन अपने मुक्दिाता ईश्वर में आनन्द मनाता है।

प्र) क्योंकि उसने अपनी दीन दासी पर कृपादृष्टि की है। देखो, अब से सब पीढ़ियाँ मुझे धन्य कहेंगी।

उ) क्योंकि सर्वशक्तिमान् ने मेरे लिए महान् कार्य किये हैं और पवित्र है उसका नाम।

प्र) उसकी कृपा उसके श्रद्धालु भक्तों पर पीढ़ी–दर–पीढ़ी बनी रहती है।

उ) उसने अपना बाहुबल प्रदर्शित किया है, उसने घमण्डियों को तितर–बितर कर दिया है।

प्र) उसने शक्तिशालियों को उनके आसनों से गिरा दिया और दीनों को महान् बना दिया है।

उ) उसने दरिद्रों को सम्पन्न किया और धनियों को खाली हाथ लौटा दिया है।

प्र) उसने अपनी दया का स्मरण कर अपने दास इस्राएल को संभाला है।

उ) जिस चिरस्थायी दया की प्रतिज्ञा उसने हमारे पूर्वज इब्राहीम तथा उनके वंश के प्रति की थी।

मरियम ने कहा, "देखिए, मैं प्रभु की दासी हूँ। आपका कथन मुझ में पूरा हो जाए।" (लूकस1:38)

प्र) पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को बढ़ाई हो
उ) जैसे वह आदि में थी, अब है और अनन्त काल तक बनी रहेगी, आमेन।

अन्तरा:

सब – वह कौन है जो उषा के समान सुहावनी, चन्द्रमा के समान सुन्दर, सूरज के समान उज्जवल तथा युद्ध के लिए प्रस्थान करती हुई, सेना के समान भयंकर गति से आती है।

प्र) – हे मरिया, जो गर्भ में निष्कलंक पडी थी।
उ) – हमारे लिए, जो तेरी शरण में आते हैं, प्रार्थना कर।

हम प्रार्थना करें– हे प्रभु येशु ख्रीस्त, तू जो पिता के पास हमारा मध्यस्थ है, जिसने परम धन्य कुँवारी अपनी माता को हमारी भी माता और अपने पास हमारी मध्यस्था के रूप में नियुक्त करने की कृपा की है, ऐसी दया कर कि जो कोई तेरे पास दान माँगने आये, वह उन सबों को उनके द्वारा प्राप्त करके आनन्द मनाये। आमेन।

हमारे जीवन्त महापुरोहित मसीह की प्रार्थना

(पृष्ठ 1 का शेष भाग)

संसार में हूँ, यह सब कह रहा हूँ जिससे उन्हें मेरा आनन्द पूर्ण रूप से प्राप्त हो। मैंने उन्हें तेरी शिक्षा प्रदान की है। संसार ने उनसे बैर किया, क्योंकि जिस तरह मैं संसार का नहीं हूँ, उसी तरह वे भी संसार के नहीं हैं। मैं यह नहीं माँगता कि तू उन्हें संसार से उठा ले, बल्कि यह कि तू उन्हें बुराई से बचा। वे संसार के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी संसार का नहीं हूँ।

तू सत्य की सेवा में उन्हें समर्पित कर। तेरी शिक्षा ही सत्य है। जिस तरह तूने मुझे संसार में भेजा है, उसी तरह मैंने भी उन्हें संसार में भेजा है। मैं उनके लिए अपने को समर्पित करता हूँ, जिससे वे भी सत्य की सेवा में समर्पित हो जायें। मैं न केवल उनके लिए विनती करता हूँ, बल्कि उनके लिए भी जो, उनकी शिक्षा सुनकर मुझ में विश्वास करेंगे। सब–के–सब एक हो जायें। पिता! जिस तरह तू मुझ में है और मैं तुझ में, उसी तरह वे भी हम में एक हो जायें, जिससे संसार यह विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा।

तूने मुझे जो महिमा प्रदान की, वह मैंने उन्हें दे दी है, जिससे वे हमारी ही तरह एक हो जायें– मैं उन में रहूँ और तू मुझ में, जिससे वे पूर्ण रूप से एक हो जायें और संसार यह जान ले कि तूने मुझे भेजा और जिस प्रकार तूने मुझे प्यार किया, उसी प्रकार उन्हें भी प्यार किया।

पिता! मैं चाहता हूँ कि तूने जिन्हें मुझे सौंपा है, वे, जहाँ मैं हूँ, मेरे साथ रहें, जिससे वे मेरी महिमा देख सकें, जिसे तूने मुझे प्रदान किया है; क्योंकि तूने संसार की सृष्टि से पहले मुझे प्यार किया।

न्यायी पिता! संसार ने तुझे नहीं जाना। परन्तु मैंने तुझे जाना है और वे जान गये कि तूने मुझे भेजा। मैंने उन पर तेरा नाम प्रकट किया है और प्रकट करता रहूँगा, जिससे तूने जो प्रेम मुझे दिया, वह प्रेम उन में बना रहे और मैं भी उन में बना रहूँ।" **(योहन17)**

प्रभु के मधुर भजनों से भागें अपदूत

मानो या न मानो पर यह बात आजमा कर देख लो कि यदि आप पूरे दिल से प्रभु के मधुर भजन सुनें या गायें तो वहाँ पर अपदूतों का टिक पाना बहुत ही मुश्किल है। शैतान प्रार्थना करने वाले सन्तों से तथा प्रभु के मधुर भक्ति गीतों से, विशेषकर जो ईश वचन पर आधारित हों या पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखे गये हों, दूर भागता है। सामूहिक तौर पर इन भजनों को गाने पर इनका प्रभाव और भी शक्तिशाली हो जाता है।

उदाहरण के तौर पर जीवन–धाम में इतवार को जब **'तेरी आराधना'** या **'पिता तेरी वन्दना करते हैं'** या **'आत्मा आत्मा'** जैसे मधुर भजनों को सभी उपस्थित विश्वासी जन भक्तिपूर्वक बाजे की धुन पर मिलकर गाते हैं तो अपदूतग्रस्त व्यक्ति एकाएक चिल्लाते या झूमते–भागते हुए नज़र आ जाते हैं। साथ ही अनेक विश्वासियों को भजन गाते हुए लीन हो जाने पर प्रभु येशु, माँ मरियम व पवित्र आत्मा के अद्भुत दर्शन पाने का सौभाग्य भी प्राप्त हो जाता है। यह सचमुच एक दैवीय व स्वर्गिक अनुभव बन जाता है जब प्रभु स्वयं, स्वर्गदूतों व सन्तों के साथ, स्वर्ग से पृथ्वी पर उतर आते हैं।

प्रभु येशु ने स्वंय सामूहिक प्रार्थना के विषय में यह प्रतिज्ञा दी है, **" मैं तुम से यह कहता हूँ- यदि पृथ्वी पर तुम लोगों में दो व्यक्ति एकमत हो कर कुछ भी माँगेंगे, तो वह उन्हें मेरे स्वर्गिक पिता की ओर से निश्चय ही मिलेगा; क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच उपस्थित रहता हूँ।" (मत्ती 18:19-20)**

सामूहिक तौर पर जब आध्यात्मिक भजन गाये जायें, तो विभिन्न वादनों का सही उपयोग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह भजन को मधुरता, सुन्दरता, एकता व एक मनोहर पृष्टभूमि प्रदान करता है। वह उसमें एक नया जोश व नई उमंग ले आता है। और इस तरह संगीत हृदय को आनन्दित करता है। **(प्रवक्ता 40:20)** पर एक मधुर वाणी में गाया हुआ गीत सर्वधिक प्रभावशाली है। वह अति मधुर एवं शान्तिदायक, आनन्ददायक और मनमोहक वाणी जब सभी वादनों की धुन पर लय के साथ चलती है, तो संगीत के विभिन्न रसों को उजागर करती व भजन में नवस्फूर्ति डाल देती है। वह सभी चिन्ताओं व निराशा से दिलो–दिमाग को मुक्त कर राहत पहुँचाती है। पवित्र बाइबिल में लिखा है, "मधुर वाणी मधुमक्खी का छत्ता है। वह मन को आनन्द व शरीर को स्वास्थ्य प्रदान करती है।" **(सूक्ति 16:24)** "बाँसुरी और सितार श्रुतिमधुर हैं, किन्तु इन दोनों की अपेक्षा निष्कपट वाणी श्रेष्ठ है।" **(प्रवक्ता 40:21)**

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति प्रभु की स्तुति व भजनों में स्वंय को हमेशा लीन रखकर ईश्वर द्वारा प्रदत्त शान्ति व आनन्द का लुत्फ उठाता है और इस संसार के दुःख, चिन्ताओं, बुराई, असन्तुष्टि, अशान्ति, पीड़ा इत्यादि से मुक्त रहता है। इसलिए तो सन्त पौलुस लिखते हैं – "मिलकर भजन, स्तोत्र और आध्यात्मिक गीत गायें; पूरे हृदय से प्रभु के नाम पर सब समय, सब कुछ के लिए, पिता परमेश्वर को धन्यवाद देते रहें।" **(एफेसियों 5:19-20)** ऐसा वरदान हम सभी को प्राप्त हो, यह हम प्रार्थना करें।

आध्यात्मिक भजन चाहे घर पर आप खुद गायें या कोई और मधुर आवाज़ में गाये या फिर समूह में सभी मिलकर गायें या किसी कैसेट, **CD** या **DVD** में बजाकर सुनें, तो वह अपदूतों को टिकने नहीं देगा, हर बन्धन से मुक्त करेगा व घर में शान्ति लायेगा। उदाहरण के लिए जीवन–धाम के भजनों की कैसेट "जीवन–धाम के फूल" (भाग **1,2** और **3**) घर पर बजाने से बहुतों ने अपने घर–परिवार में शान्ति व प्रेम का अनुभव करने का साक्ष्य दिया है। दूसरी ओर अपदूतग्रस्त व्यक्ति इस कैसेट को सुनने पर अशान्त हो जाते हैं; वे सुनना नहीं चाहते व कान बन्द कर लेते, शोर मचाते, भजन को बन्द करने की कोशिश करते या स्टीरियो, डेक या म्यूज़िक सिस्टम को खराब करने की कोशिश करते हैं। कमज़ोर हो जाने पर अपदूत को मजबूरन उस व्यक्ति को झकझोर कर जाना पडता है।

पवित्र बाइबिल में हमें इस विषय में कुछ उदाहरण मिलते हैं। एक प्रमुख उदाहरण पुराने विधान में समूएल के ग्रन्थ में हमें मिलता है जब प्रभु के आत्मा ने साऊल का, उसकी अवज्ञा के कारण, त्याग कर दिया था और एक दुष्ट आत्मा उसे सता रहा था। दूसरी तरफ प्रभु ने यिशय के पुत्र दाऊद को इस्राएल के राजा के रुप में चुन लिया था और उसे अपने मन के अनुकूल पुरूष कहा

"उसके माता-पिता उसे देख कर अचम्भे में पड़ गये और उसकी माता ने उस से कहा, "बेटा! तुमने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? देखो तो, तुम्हारे पिता और मैं दुःखी होकर तुम को ढूँढ़ते रहे।" (लूकस2:48)

था। **(1 समूएल 13:14)** प्रभु ने स्वंय अपने नबी समूएल से दाऊद का अभिषेक करवाया था। ईश्वर का आत्मा दाऊद पर छा गया और उसी दिन से उसके साथ विद्यमान रहा। **(पढ़ें 1 समूएल 16)**

साऊल दुष्ट आत्मा से सताये जाने के कारण बैचेन हो जाता था। इसलिए उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि वे उसके लिए एक निपुण सितारवादक का पता लगाकर उसे उसके पास ले आयें। पता लगाने पर वे दाऊद को उसके पास ले आये और तब से वह साऊल की सेवा करने लगा। वह साऊल को इतना प्रिय हो गया कि वह उसका कृपापात्र व शस्त्रवाहक सेवक बन गया। ***"जब-जब वह ईश्वर द्वारा भेजा हुआ आत्मा साऊल पर सवार होता, दाऊद सितार बजाने लगता। इस से साऊल का मन शान्त होता, उसे आराम मिलने लगता और वह दुष्ट आत्मा उस से दूर हो जाता।"***

(1 समूएल16:23)

बाद में दाऊद को साऊल युद्ध में जहाँ भी भेजता, दाऊद हमेशा विजयी होता था, सफल होता था **(1 समूएल 18:5)** क्योंकि प्रभु का आत्मा उसके साथ हमेशा रहता था। पर लोगों से दाऊद की अपने से अधिक प्रशंसा सुनकर साऊल उसे ईर्ष्या की दृष्टि से देखने लगा। ईर्ष्या के कारण साऊल पर दुष्ट आत्मा फिर सवार हो जाता था और उसने दाऊद को, जो उसके लिए सितार बजाता था, अपने भाले से दीवार में ठोंकने की तीन बार कोशिश की पर दाऊद ने, ईश्वर की कृपा से, स्वंय को बचा लिया।

(1 समूएल18:9-11; 19:9-10)

साऊल की मृत्यु के बाद लोगों ने दाऊद को इस्राएल का राजा बना दिया और उसने चालीस वर्ष तक राज्य किया।**(2 समूएल5:3-5)** दाऊद अपने सब कार्यों में धन्यवाद देते हुए परमपावन सर्वोच्च ईश्वर की स्तुति करते रहे। वह अपने सृष्टिकर्ता के प्रति अपना प्रेम प्रकट करने के लिए सारे हृदय से गीत गाया करते थे। स्तोत्र–ग्रन्थ के अधिकतम स्तोत्र दाऊद ने ही अपने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में लिखे थे और उसमें दाऊद के द्वारा चुने हुए संगीतकारों ने संगीत निर्देशक कनन्या, जो लेवियों का प्रधान था और संगीत में निपुण था, के निर्देशन पर सारंगी, सितार, झाँझ, तुरही, वीणा, सिंगे इत्यादि वाद्यों को बजा कर संगीत को आनन्दमयी बना दिया था। प्रभु का मन्दिर उनके राज्यकाल में प्रातःकाल से ही प्रभु के पवित्र नाम की स्तुति से गूँज उठता था।

(1 इतिहास 15:16-24; प्रवक्ता 47:9-12)

इसलिए प्रभु ने उसे प्रचुर मात्रा में आशीष दी और उसे दी हुई हर प्रतिज्ञा को बखूबी निभाया। किसी ने ठीक ही कहा है कि एक मधुर गीत दस प्रार्थनाओं के बराबर होती है। वास्तव में प्रभु स्वंय हमारे द्वारा हृदय से गाये गये मधुर भजनों व स्तुतिगीतों को सुनका आनन्दित होते हैं और हमें भरपूर आशीष भी देते हैं। प्रभु के आदर में हम एक सरल–सा (**स्तोत्र 150** पर आधारित) स्तुति गीत गायें:

रब्ब की होवे सन्ना

Ch: रब्ब की होवे सन्ना हमेशा,
रब्ब की होवे सन्ना (**2**)

1. रब्ब की होवे मदह सराई,
उसके नाम की सन्ना।
2. जै के जोर से फूँको नरसिंगे, बरबत बीन बजा।
3. तार–दार पर रागिनी छेड़ो, डफ़ और तबला बजा।
4. बाँसुरी पर सुना सुरीली, झन–झन झाँझ बजा।
5. सारे मिल कर ताली बजाओ, गाओ रब्ब की सन्ना।

'जीवन-धाम' के जीवित साक्ष्य

झुककर चलने वाली महिलाओं को सीधा करते प्रभु येशु

प्रभु येशु की स्तुति हो! प्रभु येशु को धन्यवाद और महिमा!

मैं, सुनीता (उम्र–39 वर्ष), (ऊपर चित्र में बायीं ओर), पिछले13 साल से दर्द से बेहाल होकर झुककर चलती थी। 13 साल पहले जब मेरी बेटी पैदा हुई थी, उसके 17 दिन बाद मेरे पीठ में दर्द शुरू हो गया। मैं न तो बैठ सकती थी और न ही चल सकती थी। दर्द के कारण मैं सीधे होकर चल नहीं पाती थी। मुझे सहारा लेकर चलना पड़ता था। डॉक्टर ने ऑपरेशन करवाने की सलाह दे दी जिसके लिए मुझे एक लाख रूपये से भी ज्यादा खर्चा बताया गया। पर मैं सिर्फ दवा ही लेती रही जिससे थोड़ी ही राहत मिलती थी।

किसी महिला के बताने पर मैं यहाँ **जीवन-धाम** में हर इतवार प्रार्थना में शामिल होने लगी। पहले इतवार को ही मुझे बहुत आराम मिल गया। घर पर मैं रोज प्रार्थना करने लगी। तीन हफ्ते बाद आज मैं खुद उठ–बैठ सकती हूँ व कमर से भी सीधी हो गई हूँ। एक और कृपा मुझे प्रभु से यह मिली कि दर्द के कारण जो मैं अपना सीधा हाथ ऊपर नहीं उठा सकती थी, वह अब प्रभु की दया से पूरा ऊपर उठा सकती हूँ। प्रभु येशु को इन अमूल्य कृपाओं के लिए बारम्बार स्तुति और धन्यवाद। **सुनीता**, फरीदाबाद

"प्रभु निर्बल को संभालता और झुके हुए को सीधा करता है।" **(स्तोत्र 145:14)**

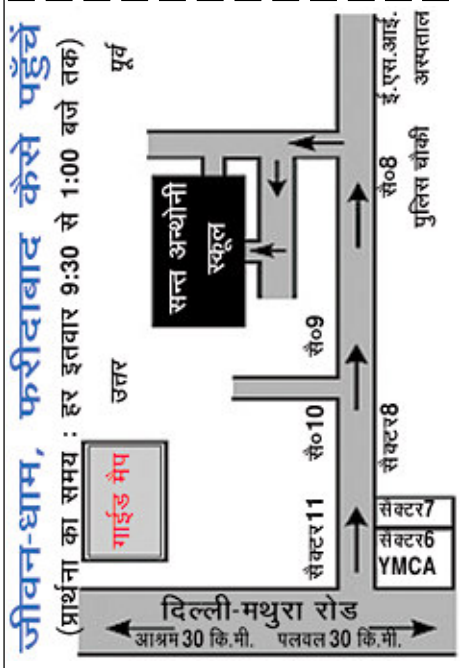

"येशु ने अपनी माता को और उनके पास अपने शिष्य को, जिसे वह प्यार करते थे, उनके क्रूस के पास देखा। उन्होंने अपनी माता से कहा, "भद्रे! यह आपका पुत्र है।"" **(योहन19:25-26)**

येशु ने मेरे बेटे को नया जीवन दिया

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मैं, रेश्मा, आज अपने बेटे भोले (उम्र–2 वर्ष) की गवाही दे रही हूँ जिसे प्रभु येशु ने अपनी दया व प्रेम से बचा लिया है। मेरे तीन बच्चे हैं और भोले उन में सब से छोटा है। जब वह 10 दिन का था, तब वह अपनी बहन के कन्धे से नीचे गिर गया था जिससे उसके सिर पर गुम चोट आ गई थी। बाद में ध्यान देने पर ही उसके सिर पर मुझे सूजन दिखी। उसके सिर पर से माँस फट रहा था और अन्दर घाव बनता गया। वहाँ से पस निकलती जा रही थी। डॉक्टर ने दवा दे दी और सूई से पस निकाल दी। उसका एक कान भी माँस के साथ उधड़–सा रहा था। पूरे एक साल तक मैंने उसका इलाज करवाया। डॉक्टर ने उसके सिर की गम्भीर हालत देख कर यहाँ तक बोल दिया था कि वह शायद फिर चल नहीं पायेगा या बच नहीं पायेगा। जवाब देने पर मैं उसे दूसरे अस्पताल में ले गई। पर वहाँ वह इलाज के लिए बहुत पैसे माँगने लगे।

इसी दौरान मैं रोज़ प्रभु येशु से उसके लिए यह प्रार्थना करती थी कि उसे एक जीवनदान मिले। मैं **जीवन-धाम** में काफी महीनों से हर इतवार जाती थी। उस रात को उसे अस्पताल में भर्ती कर दिया और मैं रो–रो कर उसके लिए प्रार्थना कर सो गई। स्वप्न में उस रात मैंने यह देखा कि कुछ औरतें उसके पास आकर उसके लिए हाथ बढ़ा कर प्रभु से प्रार्थना कर रही हैं। उसी दिन से भोले धीरे–धीरे चंगा होता गया। प्रभु येशु की कृपा से अब वह पूर्णतः स्वस्थ हो गया है। उसके सिर का घाव भर गया है। उसके किसी भी अंग में कोई कमी नहीं है और वह खूब दौड़ता–खेलता है। प्रभु येशु को लाखों बार धन्यवाद!

रेश्मा, भोले शंकर, फरीदाबाद

"उसने मुझे मृत्यु से छुडाया। उसने मेरे आँसू पोंछ डाले और मेरे पैरों को फिसलने नहीं दिया, जिससे मैं जीवितों के देश में प्रभु के सामने चलता रहूँ।" (स्तोत्र 116:8-9)

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

6) लूकस रचित सुसमाचार
d) अध्याय 11-14

प्रस्तुत प्रश्न **सन्त लूकस** के सुसमाचार के अध्याय **11 से 14** तक से बनाये गये हैं जिनके सही उत्तरों को आप ने दिये गये उत्तरों से **(क, ख, ग और घ)** चुनकर हमें लिख भेजना है। कुछ प्रश्नों के एक से भी ज्यादा सही उत्तर हो सकते हैं। साथ ही सही उत्तर देने वाले वाक्याशों की भी संख्या अध्याय सहित बतायें।

1) बड़े भोज पर आमंत्रित लोगों ने भोज पर न आने के क्या–क्या बहाने किये?
क) मैं बीमार हूँ और बिस्तर पर हूँ।
ख) मैंने विवाह किया है।
ग) मैंने खेत मोल लिया है और मुझे उसे देखने जाना है।
घ) मैंने पाँच जोड़े बैल खरीदे हैं और उन्हें परखने जा रहा हूँ।

2) प्रभु येशु ने इन में से किन्हें और कहाँ पर विश्राम के दिन चंगा किया था ?
क) जलोदर से पीड़ित मनुष्य को, फरीसी के घर
ख) गूँगे अपदूतग्रस्त को, मंदिर में
ग) अपदूतग्रस्त दुर्बल स्त्री को, सभाग्रह में
घ) एक कोढ़ी को, समारिया में

3) न्याय के दिन कौन इस अविश्वासी पीढ़ी के लोगों के साथ जी उठकर इन्हें दोषी ठहरायेगी?
क) सुलेमान ख) योनस
ग) निनिवे के लोग घ) दक्षिण की रानी

4) प्रभु येशु ने लोगों को समझाने के लिए ईश्वर के राज्य की तुलना किससे की ?
क) येरूसालेम से ख) खमीर से
ग) राई के दाने से घ) अंजीर के पेड़ से

5) दुराग्रह करने वाले मित्र का उदाहरण किस बात को दर्शाता है? वह अपने मित्र से कब और क्या माँगता है?
क) हठीलापन, शाम को रोटियाँ
ख) प्रार्थना का प्रभाव, आधी रात को रोटियाँ
ग) स्वार्थ, आधी रात को उधार
घ) व्याकुलता, आधी रात को रोटियाँ

6) प्रभु येशु ने इन में से किन–किन को धन्य कहा है?
क) उसे, जिसे स्वामी आने पर जागता हुआ पायेगा
ख) उसे, जो ईश्वर के राज्य में भोजन करेगा
ग) उन्हें, जो प्रभु के नाम पर आते हैं।
घ) उन्हें, जो कंगालों, लूलों, लँगडों और अन्धों को भोज पर बुलाते हैं।

7) प्रभु ने अपने उपदेश के बाद फरीसियों को क्यों धिक्कारा?
क) क्योंकि वे न्याय और ईश्वर के प्रति प्रेम की उपेक्षा करते हैं।
ख) क्योंकि वे नबियों के लिए मकबरे बनवाते हैं।
ग) क्योंकि वे सभाग्रहों में प्रथम आसन और बाज़ारों में प्रणाम चाहते हैं।
घ) क्योंकि वे भीतर से लालच और दुष्टता से भरे हैं।

8) इन में से कौन से वचन प्रभु येशु ने नहीं कहे ?
क) तुम में जो अपना सब कुछ नहीं त्याग देता, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता।
ख) मैं पृथ्वी पर आग लेकर आया हूँ।
ग) छः दिन हैं, जिन में काम करना उचित है।
घ) मैं फूट डालने आया हूँ।

6) लूकस रचित सुसमाचार
c) अध्याय 8-10

1) क), ख) और घ) (10:4, 7-9)
2) क), ख) और ग) (9:28,30)
3) ख) (8:11-12, 14)
4) ख) और घ) (9:3)
5) क) और घ) (10:13,15)
6) ख) और ग)(8:39,56;9:21-22,43-45)
7) क) (9:13, 14, 17)
8) ख, ग) और घ) (8:27,29)

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**
ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सहित) क्रमानुसार होने चाहिएँ।
ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।
घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।
ङ) सहीं उत्तरों से मिलाने के लिए अपने उत्तरों की एक प्रति अपने पास भी रखें।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित.....हैं ?
क्या आप दुःखी.....हैं ?
क्या आप रोगी.....हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति.....है ?

आपको सांत्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्तोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः 9.00 बजे से 12.30 बजे तक 'जीवन-धाम' 696/22, फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर यीशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

"तब स्वर्ग में युद्ध छिड़ गया। मिखाएल और उसके दूतों को पंखदार सर्प से लड़ना पड़ा। पंखदार सर्प (शैतान) और उसके दूतों ने उनका सामना किया, किन्तु वे नहीं टिक सके। और स्वर्ग में उनके लिए कोई स्थान नहीं रहा।" (प्रकाशना12:7-8)

Edited & Published by JEEVAN DHAM, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.